Vol 5 Issue 4 May 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 4 | May - 2015 Available online at www.isrj.org

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में जीवन मूल्य और प्रकृति एक अनुशीलन

सुमन यादव
हिन्दी ए रिसर्च पेपर,

सारांश

जीवन–मूल्य कहने मात्र से जिस अवधारणा का संकेत होता है, उसमें 'मूल्य' शब्द के साथ 'जीवन' विशेषण के रूप में प्रयुक्त है। जीवन का मूल्य जीवन का उत्कर्ष जीवन के मूल्यों का मूल आधार है। मूल्य बाहर से आरोपित कोई वस्तु नहीं है। ये जीवन के संदर्भ में विकसित पल्लतित परिवर्तित होते है। जीवन के संदर्भ में हमारी जो दृष्टि होगी, उसी के अनुरूप जीवन–मूल्य हमारे हाथ लगते है। ऐसे में सर्वप्रथम जीवन और मूल्य के अर्थो को अलग–अलग निरूपित करने पर ही उसकी प्रकृति का अध्ययन किया जा सकता है।

प्रस्तावना–

मानक हिन्दी कोष में 'जीवन' को पांच लक्षणों से सम्पन्न विशेष प्रकार की क्रियाशीलता माना है और कहा है – जीवन एक विशिष्ट प्रकार की क्रियाशीलता है जिसके पांच लक्षण है – गतिशीलता, अनुभूति या संवेदना आत्मपोषण आत्मबंधन और प्रजनन।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में जीवन मूल्य और प्रकृति का सजीव रूप से अध्ययन किया है। उनके उपन्यासों में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक प्रकृति का सजीव वर्णन किया गया है।

राजेन्द्र यादव ने राजनैतिक प्रकृति को अपने कथासाहित्य के माध्यमसे अभिव्यक्त किया है। उनके अनुसार आधुनिक युग के कार्यो को को निर्धारित व प्रतिष्ठित करने वाली एकमात्र शक्ति राजनीती है ''हर समय का अपना एक मुख्य और नियन्ता स्तर होता है। मध्यकाल को मुख्यस्तर धर्म था और बिना धर्म को समझने में उस समय के साहित्य को समझा जा सकता था न जीवन को। आज की केन्द्रीय शक्ति राजनीति है ... बिना राजनैतिक चेतना के आज न साहित्य लिखा जा सकता है और न समझा जा सकता है। राजेन्द्र यादव मानते हैं कि राजनीति में प्रवेश या हिस्सा लेने के लिए वैचारिक परिपक्वता आवश्यक है, अन्यथा इसके दुष्परिणाम सामने आऐंगे। राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'उखडे हुए लोग' में राजनीतिक प्रकृति का सजीव चित्रण दिखाई देता है। इसमें लेखक ने एक ओर देशबन्धु चरित्र–चित्रण द्वारा पूंजीपतियों के गुप्त जीवन को अनावत करके उनके शोषक रूप का यथार्थ–चित्रण किया है तो दूसरी ओर शरद और सूरज जैसे मध्यवर्गीय पात्रों को उघाड़ कर वर्तमान राजनीतिक प्रकृति का वर्णन किया है।

इसलिए कहा जाता है कि प्रत्येक युग की विशेष शक्ति होती है। आज की वह शक्ति राजनीति है। राजनीति भी वहीं अंग्रेजों के समय से चली हुई उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। युवा मतदाताओं को लुभाने के लिए राजनैतिक लोग हर सम्भव प्रयास करते है। इसी प्रकार राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'उखड़े हुए लोग' में भी देशबन्धु भी अपनी राजनीति

का गलत प्रयोग करता है। राजनैतिक लोग हिंसा फैलाते हैं। जिससे प्रकृति पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है जिसे सभी को भुगतना पड़ता है।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में आर्थिक चिंतन का भी प्रकृति पर प्रभाव देखा जा सकता है। अर्थ जीवन और जगत् की गतिविधियों को संचालित करता है। समाज के प्रत्येक कार्य में अर्थ का महत्व रहता है। बिना आर्थिक कार्य–व्यापार को साथ लिए हम एक कदम भी नहीं चल सकते। अगर यह कहें कि अर्थ विकास की प्रमुख धुरी है तो गलत न होगा।

मध्यवर्ग अपनी मानसिकता के कारण परेशान रहता है। राजेन्द्र यादव मध्यवर्गीय युवक के आकर्षण को इस तरह अभिव्यक्त करते है ''बिना राष्ट्रीय संस्कार, शिक्षा और संस्कृति के हमने अपनी प्रतिभाशाली पीढ़ियों के सामने परम विकसित समृद्ध और कर्मठ संसार के दरवाजे खोल दिए और सारा समाज एक अजीब भागदौड़ में शामिल हो गया। गरीब युवा का शिक्षा के बाद नगरों, महानगरों में आकर रोजगार प्राप्त करना तथा बाद में वहीं स्थायी रूप से बस जाना, जहां उसकी मजबूरी है, वहीं गांवों व कस्बों में नगरीय जीवन की सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाए तो नगरों में निरन्तर बढ़ती जा रही भीड़ को नियन्त्रित किया जा सकता है। मध्य व निम्न मध्यवर्गीय परिवारों का आर्थिक पक्ष दिन–प्रतिदिन समस्याग्रस्त हो रहा है क्योंकि ऐसी पृष्ठभूमि का युवक शिक्षित होकर रोजगार के लिए सड़क पर आता है तो उसे निराशा हाथ लगती है। 'सारा आकाश' उपन्यास का समर भी रोजगार के लिए सड़कों पर दिन भर भटकता रहता है क्योंकि उसकी आर्थिक परिस्थिति सही नहीं है। इस प्रकार से 'राजेन्द्र यादव' के उपन्यासों में आर्थिक जीवन भी सही नहीं है। इस प्रकार आर्थिक रूप से सही न होने पर संयुक्त परिवार दो भागों में बंट जाता है। आर्थिक नीतियों को जिस ढंग से जीवन और प्रकृति में तैयार किया जा रहा है वह ठीक नहीं है। हमें चाहिए कि गांव तथा शहरों केमध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग के लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याओं के अनुसार ही नीतियां बनाई जानी चाहिए। साथ ही एक कारण यह भी है कि मध्यवर्ग अपनी मानसिक मन–मुटाव तथा बुनावट के कारण हमेशा परेशान रहता है।

भारतीय समाज में हजारों वर्षो से विषमता रही है और इस विषमता का आधार हैं समाज का मनुवादी विभाजन तथा आर्थिक साधनों पर सवालों का नियन्त्रण। हमारे समाज के वे तथाकथित श्रेष्ठ लोग इन निरीह लोगों को हमेशा दबाते मारते और उन पर अत्याचार करते आए है। मध्यवर्ग प्रगतशील वर्ग है। इस वर्ग के सहारे ही समाज उन्नतशील बनता है। निम्न वर्ग अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में लगा रहात है तो उच्च वर्ग के पास इतना अवकाश नहीं है िकवह सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सके। इसलिए सामाजिक मर्यादाओं व मूल्यों का पालन करने का दायित्व मध्यवर्ग पर आ जाता है। समाज के किसी भी भाग में होने वाली हलचल मध्य वर्ग को अवश्य प्रभावित करती है।

समाजशास्त्र शब्दकोष के अनुसार ''मध्यवर्ग आज जनसंख्या के उस विभिन्न भाग को सूचित करने वाला पारिभाषिक शब्द हैं जिसमें मुख्यता छोटे–छोटे व्यापारी और उद्योगपति व्यावसायिक एवम् दूसरे सामान्य आय वाले बौद्धिक कार्यकर्ता, कुशल शिल्पी, समृद्ध किसान तथा बड़े व्यापारिक केन्द्रों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के केवल वेतनभोगी सेवक आते है। उनमें शैक्षणिक स्तर, जीवन स्तर और पारिवारिक जीवन के आदर्शो एवम् उनके लोकापचार तथा मनोविनोदात्मक हितों में हैं। राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्ग का वर्णन–चित्रण विस्तार पूर्वक हुआ है। 'सारा आकाश' में मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं व सीमाओं का वर्णन वास्तविकता के साथ हुआ है। मध्यवर्गीय लोगों में सामाजिक दिखावे का भाव विद्यमान रहता हैं और इसको पूरा करने के लिए यह वर्ग, अपनी आय से भी ज्यादा व्यय कर डालता हैं जो कष्टदायी हो जाता है। अपनी सामाजिक मर्यादा एवम् पारिवारिक इच्छाओं हेतु पढ़ने वाले युवकों का विवाह करना, विवाहित के लिए बेहद कष्टपूर्ण हो जाता हैं। मध्यवर्गीय जीवन जी रहे लोगो के अपने सपने होते है। वे विवाह के बाद भविष्य की योजनाएं बनाते है। लेकिन जब इन योजनाओं को पूर्णता नहीं मिलती तो इनके जीवन में कष्ट ही कष्ट हो जाते है। ये मानसिक रूप से आघात से ग्रस्त हो जाते है।

भारतीय समाज में सदियों से वर्ण–व्यवस्था प्रचलित रही है। इस व्यवस्था ने समाज को अनेक रूप में विभाजित किया है। आज समाज में वर्ण–व्यवस्था के बंधन टूट रहे है। वर्ण का स्थान वर्ग ने ले लिया है क्योंकि समाज में व्यक्ति की पहचान आर्थिक आधार पर होने लगी है। पुरानी पीढ़ी के लोग जातिगत चिंतन को नकार रहा है। इस जातिगत संकीर्णता को तोड़ने के लिए शिक्षा का और प्रचार–प्रसार आवश्यक है। इसके साथ ही उन लोगो को कठोर दण्ड़ दिए जाने का प्रावधान किया जाए जो जाति के आधार पर व्यक्ति–व्यक्ति में भेद करते है। हिन्दू मत के अनुसार जाति अपने अगले आयाम पर सम्प्रदाय में विलीन हो जाती है।

आधुनिक युग में शिक्षा बढ़ी है जिसके कारण लोगो के जीवन प्रकृति में सामाजिक व आर्थिक रूप से परिवर्तन

आया है। पुरानी रूढ़ियों या सामाजिक लीकों को नकारना आज के युवक द्वारा उचित जान पड़ता है। इस तथ्य का निरूपण 'यादव' जी ने अपने चिंतन व लेखन दोनो में किया है। 'उखड़े हुए लोग' के शरद व जया 'एक इंच मुस्कान' के अमर व रंजना, 'मंत्रविद् के तारक व सुरजीत रूढ़िगत वैवाहिक मान्यताओं को ठुकराते हुए प्रेम विवाह करते है। शरद और जया तो बिना विवाह किए पति–पत्नी के रूप में रहते है। इसी तरह रंजना अपने परिवार की इच्छा का विरोध करते हुए अमर से विवाह करती है। इस तरह आज का युवा वर्ग अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहता है। समाज के बंधनों में बंध कर के नहीं। आज जो समाज में साम्प्रदायिकता की भावना जो दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है उसे समाप्त करना होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करे तभी समाज साम्प्रदायिक संकीर्णता से मुक्त हो सकता है। अततः तभी सम्प्रदाय राष्ट्र की रचना करते हैं।

ग्रामीण जीवन सरल व मेल–मिलाप का होता है। उनके सम्बन्धों में निकटता के कारण परस्पर आत्मीयता विद्यमान रहती है। लेकिन ग्रामीण जीवन की यह विशेषता धीरे–धीरे भ्रष्ट होती जा रही है। आज गांवों में भी ईर्ष्या व द्वेष का वातावरण बना हुआ है। पहले गांवों में संयुक्त परिवार होते थे। परन्तु अब मशीनीकरण युग होने के कारण संयुक्त परिवार अब कम होते जा रहे है। नगरों व महानगरों का वातावरण भीड़ भरा होता है। लोग रोजगार की तलाश में शहरों में जाने लगे है।

अर्थमूलक सामाजिक संरचना में आर्थिक आधार पर सामाजिकता का अध्ययन किया जाता है। उच्च वर्ग अपनी विशिष्ट सामाजिक मर्यादा के कारण समाज के अन्य वर्गो से अलग रहता है। हमारे जो संस्कार या संस्कृति है उसमें धीरे–धीरे विकृति आयी है। मन्दिर, मस्जिद जो व्यक्ति की मानसिक शान्ती के केन्द्र माने जाते रहे है, वहां पर घूसखोरी का साम्राज्य कायम है। हिन्दू धर्म को तर्क की कसौटी पर कसते हुए यादव जी व्यंग्यात्मक शैली में लिखते हैं मेरा धर्म प्राणी मात्र में एक ही ईश्वर के दर्शन करता है। सबके प्रति प्रेम, करूण और क्षमा सिखाता है। मेरी आत्मा विश्वात्मा का अंश है ... सचमुच मेरा धर्म इतना महान् है कि उसकी महानता पर विचार करते हुए मेरी वाणी रूंध जाती हैं, आंखों में आंसू आ जाते है और सारी दुनिया मुझे कीड़े–मकौडे जैसी दिखाई देने लगती है। भारत एक विशाल देश है। यहां अनेकों जातियों नस्लों व धर्मो के लोग रहते है। 'सारा आकाश का नायक समर हैं जो इण्टर में पढ़ रहा है। उसके विचारों तथा परिवार वालों के विचारों में अन्तर है। संस्कार परिवार से प्राप्त होते है। पुरूष ने स्त्री के खुन में यह भावना संस्कार की तरह कूट–कूट कर भर दी है कि वह सिर्फ शरीर है वह शरीर के सीवाय उसकी पहचान से इन्कार करता हैं। मनुष्य की परतन्त्रता का बहुत बड़ा कारण तो मुझे लगता है उसके अपने संस्कार है और संस्कार इतिहास परम्परा, संस्कृति से आते हैं। जिन्हें हम संस्कार है।

व्यापक चिंतन–शक्ति तथा सहिष्णुता के परिचायक इस दर्शन पर आधारित जीवन व्यतीत करने का साधन धर्म है। धर्म से अभिप्राय रहा – धारण करने वाला। पाश्चात्य दार्शनिक काट ने इसे नैतिकता की संज्ञा प्रदान की है। वास्तव में धर्म और नीति अविच्छिन्न रूप से संग्रथित है।

हिन्दु धर्म को तर्क की कसौटी पर कसते हुए यादव जी व्यंग्यात्मक शैली में लिखते है – मेरा धर्म प्राणी मात्र में एक ईश्वर के दर्शन करता है। सबके प्रति प्रेम करूणा और क्षमा सिखाता है। मेरा आत्मा विश्वात्मा का अंश है। सचमुच मेरा धर्म इतना महान् है कि उसकी महानता पर विचार करते हुए मेरी वाणी रूंध–जाती है। आंखों में आंसू आ जाते है और सारी दुनिया मुझे कीड़े–मकौड़े जैसी दिखाई देने लगती है।

राजेन्द्र यादव जी अपने उपन्यासों में नारी की प्रकृति का वर्णन करते हुए कहते है कि जिस संस्कृति में पुरूषों द्वारा स्त्री के ऊपर चटखारे भरा वर्णन किया जाता है। उस संस्कृति को खत्म कर देना है। अपने शारीरिक परिवर्तनों के प्रति स्त्री का स्पंदन स्वानुभूति के आधार पर होना चाहिए। घर का काम और रसोई घर की चाकरी भी जब सामाजिक उत्पादन का एक हिस्सा बनेंगे तभी स्त्रियों की चाकरी का मूल्य होगा और जब तक ऐसा नहीं होगा स्त्री रसोई घर की बांदी ही रहेगी। जिस दिन समाज ने स्त्री के वक्ष को ढकने के लिए दुपट्टे की व्यवस्था की होगी, उस दिन यह सोचा भी न होगा कि वहीं स्त्री एक दिन उसकी दी हुई व्यवस्था पित सतात्मक होने का आरोप लगाएगी। स्त्री को शव बनने से बचाने के लिए वैचारिक आन्दोलन की आवश्यकता है। उसे यह ख्याल रखना होगा कि उसकी लड़ाई किसी व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष से नहीं है। थोपी गई, अप्रासंगिक, अप्राकृतिक रख अवमूल्यित हो चुकी ऐसी जड़ प्रथाओं से है जो नारी अस्मिता के साथ क्रूर मजाक करती आयी है। इस प्रकार के नारी जागरण एवम् नारी मुक्ति के मार्ग से स्वयं नारियां भी बाधक बन सकती है।

जीवाणु से लड़ने के लिए होना चाहिए चाहे वह जीवाणु पुरूष प्रकृति की देन हो या स्त्री प्रकृति की। परन्तु

आश्चर्य की बात है कि आज नारी मुक्ति आन्दोलन इस सारी बातों को नजर अंदाज कर वैवाहिक मान्यताओं को तोड़ने, दुपट्टे को जलाने, देह मुक्ति के नारे लगाने, मातृत्व को पांव की बेड़ी बतलाने, परिवार को क्रय–विक्रय स्थल बनाने एवम् धार्मिक मान्यताओं के प्रति अनास्था व्यक्त करने में लगा हुआ है। जिस प्रकार प्रत्येक आन्दोलन के आरम्भ में अनिश्चितता की स्थिति होती है। उसके स्वरूप एवम् सिद्धान्त गठन में वैचारिक मतभेद होने लगे है। उसी प्रकार नारी मुक्ति आन्दोलन को लेकर थी तरह–तरह की व्याख्याएं प्रस्तुत की जाने लगी है। इस सम्बन्ध में राजेन्द्र यादव जी कहते है यदि आर्थिक आत्मनिर्भरता ही स्वाधीनता की कूंजी है तो जब तक स्त्री के पास देह है और संसार के पास पुरूष तब तक स्त्री की चिंता क्या जरूरत ? जरूरत है तो देह को पुरूष स्वामित्व से मुक्त करने अपने अधिकार में लेने की क्योंकि यौन शुद्धिता, पतिव्रत जैसे मूल्य स्त्री के सम्मान का नहीं पुरूष के अहंकार की दीनता और असुरक्षा का पैमाना है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में जीवन और प्रकृति का सजीव वर्णन किया है। उन्होनें अपने उपन्यासों में राजनीति, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रकृति का पूर्ण रूप से अनुशीलन किया है।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org